

भगत नामदेव – सबद ३५

मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ साँवलीओ बीठुलाइ ॥

रागु माली गउड़ा, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १८८

मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ साँवलीओ बीठुलाइ ॥१॥ रहाउ ॥

कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले ॥

दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत उबारीअले ॥१॥

गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥

ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥२॥२॥

सार: जब हम अपने विचारों को प्रश्नों के माध्यम से गहराई से परखते हैं, तब प्रायः हमें वह मूल शक्ति दिखाई देने लगती है जिसे हम अब तक अनदेखा करते आए थे, ऐसी आंतरिक दृढ़ता जो भौतिक संपत्ति से कहीं अधिक स्थायी है और प्रतिष्ठा या पद के आकर्षण के आगे भी अडिग रहती है। जब हम बाहरी मान्यता, संपत्ति, सामाजिक स्थिति, उपलब्धियों और नियंत्रण की इच्छा से अपना मोह छोड़ देते हैं तब हमारे भीतर अद्भुत स्वतंत्रता का एहसास जागता है। जिन वस्तुओं को हम कभी बहुत ज़रूरी समझते थे, वह वास्तव में अत्यंत क्षणभंगुर और अस्थिर सिद्ध होती हैं। इस सत्य को स्वीकार करने पर हम उस आंतरिक शक्ति को पहचानते हैं जो सदा हमारे भीतर विद्यमान थी और केवल पहचाने जाने की प्रतीक्षा कर रही थी। यही अनुभूति हमें उस अटूट सहारे पर भरोसा करने की शक्ति देती है, जो हमारे भीतर ही विद्यमान है।

मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ साँवलीओ बीठुलाइ ॥१॥ रहाउ ॥

मेरे पालनकर्ता, आप ही वह सार्वभौमिक स्रोत हो जो इस संपूर्ण अस्तित्व के प्रशंसनीय और मनमोहक सार का स्वरूप हैं। यह इस सत्य को रेखांकित करता है कि दिव्यता कोई दूर की अवधारणा नहीं, बल्कि वह ऊर्जा है जो सभी जीवनों का निर्माण और पोषण करती है। (१)(विराम)

कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले ॥

हाथ में चक्र लिए, वह शांति के लोक से आते हैं और हाथी के प्राणों की रक्षा करते हैं। यह पौराणिक कथा, अहं में फंसे मन की ओर इशारा करती है जिसे आत्मबोध के द्वारा मुक्त किया जा सकता है।

दुहसासन की सभा द्रौपदी अंबर लेत उबारीअले ॥ १॥

दुशासन की सभा में, जब द्रौपदी का चीरहरण किया जा रहा था, तब उसकी गरिमा सुरक्षित रही। यह दर्शाता है कि आत्मसम्मान और ईमानदारी आंतरिक उथल-पुथल पर विजय प्राप्त कर सकते हैं तब भी जब बाहरी परिस्थितियां हमारे स्वाभाविक मूल्यों को चुनौती ही क्यों न दें। (१)

गौतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥

गौतम की पत्नी अहिल्या को मुक्त किया गया और कई लोगों को पवित्र करके भवसागर से पार उतारा गया। यह दर्शाता है कि जब हमारा विवेक पत्थर की तरह कठोर हो जाता है तब आत्म-चिंतन हमारी जागरूकता और अनुकूलन क्षमता को फिर से जगाता है।

ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥ २॥ २॥

नामदेव कहते हैं, मैं, जो समाज की दृष्टि में नीची और जाति से बाहर हूँ, आपकी शरण में आया हूँ। आपकी शरण, का यह संदर्भ हमारे भीतर की उस कृपा का प्रतिनिधित्व करता है जो ज्ञान के माध्यम से आंतरिक पवित्रता प्राप्त करती है और तब खिलती है जब हम अपनी मानसिक बाधाओं को दूर कर देते हैं। (२)(२)

तत्त्व: भगत नामदेव अत्यंत विचारपूर्वक तरीके से समझाते हैं कि आत्म-सम्मान और ईमानदारी को कैसे आत्म-चिंतन और सजगता के ज़रिए बढ़ाया और अंदरूनी संघर्षों से बचाया जा सकता है। यह विशेष रूप से तब आवश्यक है जब बाहरी अपेक्षाएँ और सामाजिक दबाव हमारी आत्म-मूल्य की भावना को कमज़ोर करने का प्रयास कर सकते हैं। वास्तविक आंतरिक सामंजस्य बाहरी प्रतिष्ठा या सामाजिक मानकों के अनुरूप चलने से नहीं, बल्कि आत्मरक्षात्मक विचारों को त्यागकर और

संस्कारित मानसिक प्रवृत्तियों से मुक्त होकर अपनी स्वाभाविक समझ को अपनाने से विकसित होता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com